ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 194-197**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

मूक बधिर बच्चों का सामाजिक पुनर्वास एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

1. डॉ0 राजीव कुमार
2. नैना शुक्ला

1. विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर, 2. रिसर्च स्कॉलर– समाजशास्त्र विभाग (डी0बी0एस0 कालेज, कानपुर) कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर (उ0प्र0), भारत

Received-14.06.2024, Revised-22.06.2024, Accepted-27.06.2024 E-mail: shishir.bond07@gmail.com

सारांश: ***प्रस्तुत शोध पर शारीरिक विकलांगता के अन्तर्गत आने वाली मूक व बधिर विकलांगता को इंगित करता है। आज हमारे समाज में मूक–बधिरता की समस्या धीरे–2 बढ़ रही है एवं यह समस्या जब बच्चों में पायी जाती है तो अति विचारनीय समस्या बन जाती है। यह शोध पत्र इसी समस्या पर आधारित है एवं यह कानपुर शहर के मूक बधिर विद्यालयों पर आधारित है तथा इसमें मूक बधिर बच्चों के सामाजिक पुनर्वास के साथ–साथ सरकार द्वारा चलायी जा रही अनगिनत योजनाओं एवं उनके द्वारा दी जा रही वित्तीय सुविधाओं का लाभ मिल रहा है या नहीं एवं उनके शैक्षिक सुविधाओं व अभिभावकों द्वारा किए जा रहे उन्हे पालन पोषण की उचित जानकारी के लिए सहायक सिद्ध हुआ है।***

इस शोध पत्र के माध्यम से इन बच्चों की जागरूकता एवं उनके उचित मार्गदर्शन के साथ उन्हें समाज की जीवन धारा से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

कुंजीभूत शब्द–मूक बधिरता, मूक विकलांगता, श्रव्य विकलांगता, डिजिटलीकरण, स्पीच थैरेपी, सामाजिक पुनर्वास,वित्तीय सुविधाओं।

भारत की जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार उत्तर प्रदेश में विभिन्न निःशक्ताओं से ग्रसित कुल व्यक्तियों की संख्या 41,57,514 है, जो प्रदेश की कुल जनसंख्या का लगभग 2.08 प्रतिशत है। इसमें कई प्रकार की विकलांगता शामिल है।

"सुजनन आन्दोलन 1880–1930 के अनुसार "बालक के भौतिक, शारीरिक, भावनात्मक अथवा बौद्धिक विकलांगताका स्त्रोत माता–पिता ही रहे हैं।"[1]

1. शर्मा शशि प्रभा, वागी, दोषयुक्त एवं दृष्टि–अक्षम बालक, कारण, पहचान एवं उपचार, 2009, कनिष्क प्रकाशन डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ0सं0 76.

हमारे भारत देश में 16,40,860 व्यक्ति मूक विकलांगता जिनमें से 9,42,095 वाणी बाधित पुरुष तथा 6,98,773 वाणी बाधित महिला वर्ग की हैं। उत्तर प्रदेश में 65,820 व्यक्ति वाणी बाधित हैं तथा 83,254 व्यक्ति श्रवण बाधित हैं, वहीं कानपुर शहर में 1876 व्यक्ति बधिर विकलांगता से पीड़ित हैं। उपयुक्त आंकड़ों के आधार पर किसी भी समस्या के मर्म तक पहुंचा जा सकता है, यदि मूक बधिर बच्चों का विकास करना है तो जिस प्रकार सम्पूर्ण भारत के विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है, उसी प्रकार इस वर्ग को सही दिशा प्रदान करने एवं सशक्त बनाने के लिए इनके शैक्षिक क्रिया –कलापों में बृद्धि करना आवश्यक है।

2. कौशिक, बी0एन0 के अनुसार "विकलांगता किसी व्यक्ति के लिए वह असुविधा हैं जो श्रति या निशक्तता के कारण उत्पन्न होती है जिसके कारण उस व्यक्ति को सामान्य भूमिका का निर्वाह करने में कमी या रुकावट आती हैं"[2]

मूक बधिर विकलांगता से बाधित व्यक्ति सांकेतिक भाषा के माध्यम से अपनी भावनाओ को दूसरों के समझ रखता है। इसी को ध्यान में रखते हुए इमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ने साइन लैंग्वेज को एक विषय का दर्जा दिया गया है। जो इस वर्ग की जागरूकता में सहायक सिद्ध हुआ है।

3. "डब्ल्यू0एच0ओ0 2011 के अनुसार जिसमें 785 मिलियन लोग शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग हैं। जिसमें 5 प्रतिशत बच्चे शामिल हैं जो सामान्यतः खराब स्वास्थ्य, निम्नतम शैक्षिक उपलब्धियों, निम्न आर्थिक स्तर तथा आय के स्त्रोतों का अभाव और बढ़ती गरीबी के साथ रहते हैं जो प्रतिदिन अनेकों समस्याओं का सामना करते हैं।[3]

मूक बधिर विकलांगता से पीड़ित बच्चे ऐस विद्यालयों में अपनी शिक्षा ग्रहण करते हैं जिससे उन्हें कोई समस्या का सामना न करना पड़े। आज के सूचना प्रौद्योगिकी जगत में बहुत सारे शोध इस वर्ग के लिए किए गए हैं जिनमे ऐसे बच्चों के लिए स्मार्ट दस्ताने व कौंक्लियर इम्प्लांट व स्पीच थैरेपी इत्यादि पर अनेक कार्य किए जा रहे हैं। जिससे इस वर्ग को और अच्छी सुविधाएं प्राप्त हो पाएं।

4. कौशिक बी0एन0, विकलांग शिक्षा सिंधु, जयपुर : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1977

5. WWW.WHO 2011

शोध के उद्देश्य –

1. **मूक बधिर ग्रसित बच्चों की** पारिवारिक संरचना को ज्ञात करना।
2. मूक बधिर ग्रसित बच्चों की पारिवारिक आय का विवरण ज्ञात करना।
3. मूक बधिर बच्चों हेतु शासकीय योजनाओं की भूमिका का पता लगाना।
4. मूक बधिर बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों को ज्ञात करना।

शोध की परिकल्पना –

किसी भी शोध पत्र में उसकी परिकल्पना अति महत्वपूर्ण रूप लेती है।

1. मूक बधिर बच्चों की पारिवारिक संरचना व उनी देखभाल उचित स्थिति में पायी गयी है।
2. मूक बधिर बच्चों का परिवार निम्न आय पर ज्यादा आधारित है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

3. मूक बधिर बच्चों की सरकारी योजनाएं प्राप्त हो रही है।
4. मूक बधिर बच्चों की शैक्षिक गतिविधियां उचित हो रही हैं।

शोध की प्रविधि– प्रस्तुत शोध पत्र सोउद्देश्यपूर्ण विधि से कानपुर शहर के मूक बधिर विद्यालयों पर आधारित है, तथा इस शोध पत्र की सुगमता को ध्यान में रखते हुए (100) उत्तरदाताओं का चयन किया गया है तथा यह शोध पत्र तीन चरणों में विभाजित है। प्रथम चरण में जिला स्तर पर मूक बधिर बच्चों का चयन करने एवं द्वितीय चरण में स्नोबाल सैन्यलिंग के माध्यम से आंकड़े इकटठा किए गए हैं एवं तीसरे एवं अन्ति चरण में (8–15) वर्ष तक के बच्चों का उद्देश्यपूर्ण सैम्पलिंग के माध्यम से चयन किया गया है।

शोध का आंकड़ा संकलन– प्रस्तावित शोध पत्र में प्राथमिक व द्वतीयक दोनों स्त्रोतों के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है।

प्राथमिक स्त्रोत– समाचार पत्र, जनगणना रिपोर्ट एवं पत्र पत्रिकाएं।

साहित्य समीक्षा– पूर्व में किए गए शोध (साहित्य समीक्षा)–

1. सिंह अंजू (शोध गंगा)– 2015 इनका शोध उत्तर प्रदेश के सभी मूक बधिर विद्यालयों का है, इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि ऐसे बच्चों को (विशेष थैरेपी) व विशेष अध्यापकों की भी आवश्यकता है। इनके प्राप्त निष्कर्षों में मूक बधिर विद्यालयों की शैक्षिक समस्याओं को कम करने के लिए उनकी शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक आवश्यकताओं दोनों को ही ध्यान में रखना आवश्यक है।

2. वर्मा पल्लवी (रिसर्च गेट) इनका अध्ययन ''स्मार्ट दस्ताने का डिजाइन'' पर आधारित है जो (मूक बधिर) लोगों को अपनी बात कहने व सुनने में सहायता मिलेगीं इस प्रभावी योजना का उद्देश्य आवाजहीन व्यक्ति को आवाज दे सके तथा बधिर व्यक्ति द्वारा ''स्मार्ट दस्ताने'' का उपयोग करने में व अपनी बात रखने में समझ रहेंगें।

3. Hajela Rakhi Patrika.com (21 Jan-2021) इनका अध्ययन राजधानी जयपुर के राजकीय महाविद्यालय का है, इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि इन विद्यालयों में विशेष शिक्षकों का कोई विशेष सुविधा नहीं है। अतः इनके अध्ययन के निष्कर्ष के अनुसार कि ''अगर कालेज में भविष्य तथा विशेष शिक्षकों की नियुक्ति हो जाए तो मूक बधिर बच्चों की समस्या का अन्त हो जाएगा। ऐसे में मूक बधिर बच्चे अपनी बात शिक्षक तक तथा शिक्षक भी अपनी पढ़ाई उन तक पहुंचा सकेंगे।

4. Shukla Vivek (अगर उजाला ब्यूरो गोरखपुर Updated Mon 29 Nov-2021) विवेक शुक्ला अवगत कराया है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने राज्य सरकार को दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग व केन्द्र सरकार के सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय की सहायता से नया जीवन मिला है तथा यह सहायता (कौक्लियर इम्प्लांट) के जरिए दी गई हैं जिससे मूक बधिर बच्चे सामान्य जीवन जी सकेंगे। इस कौक्लियर इम्प्लांट के जरिए बधिर व मूक बच्चे सुन सकेंगें व भविष्य में आगे बढ़ेगें।

5. Kumar Vasant- इनका शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा परिषद विद्यालयों का है। विद्यार्थियों की बुद्धि एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है तथा इन्होंने अपने शोध अध्ययन में यह पाया कि सामान्य विद्यार्थी की मूक बधिर विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक प्रकोष्ठ पाए गए हैं तथा मूक बधिर विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के लिए समय–समय पर अभिभावकों व कुशल चिकित्सकों व विचार गोष्टी करानी चाहिए।

तालिका– 1

मूक बधिर बच्चों की सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि

	पारिवारिक संरचना	आर्थिक विवरण (प्रतिशत)	शैक्षिक विवरण(प्रतिशत)
एकाकी परिवार	80 (80%)	1. 5000–15000(1) (1%) 2. 15000–25000(56) (56%)	कम्प्यूटर शिक्षा 25 (25%) कौशल विकास 50 (50%) शिक्षा
संयुक्त परिवार	20 (20%)	3. 25000–35000(16) (16%) 4. 35000–ऊपर (27) (27%)	स्वच्छता अभियान 25(25%)
कुल	100 (100)	100 (100%)	100 (100%)

उपरोक्त तालिका से ज्ञात हुआ है कि अधिक मूक बधिर बच्चे एकांकी परिवारों से सम्बन्धित हैं उचित स्तर की नहीं पायी गयी है एवं शैक्षिक विकास में सरकारी योजनाओं के अन्तर्गत कौशल विकास कार्यक्रम पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है।

तालिका – 2

बच्चों को दिये जाने वाले सभी प्रकार के इलाज तथा थैरेपीस का विवरण

थैरेपीस	हाँ	नहीं	कुल
स्पीच थैरेपी	76 (76%)	24 (24%)	100
कॉक्लियर इम्प्लांट	55 (55%)	45 (45%)	100
सांकेतिक भाषा	85 (85%)	15 (15%)	100

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

उपर्युक्त विवरण में बच्चों में स्पीच थैरेपी के साथ–साथ कॉक्लियर इम्प्लांट का सामान्य स्तर पाया गया है।

तालिका – 3

मूक बधिर बच्चों के लिए सरकारी योजनाओं की भूमिका

क्र0सं0	सरकारी योजनाएं	सूचनादाता से प्राप्त आंकड़े	प्रतिशत
1	निरामया योजना	46	46%
2	बाल श्रवण योजना	27	27%
3	एडिप योजना	27	27%

उपरोक्त सारिणी के अनुसार लोगों में जागरूकता की कमी है। सरकारी योजनाओं का लाभ उचित स्तर पर प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

तालिका – 4

मूक बधिर विकलांगता हेतु उपलब्ध सुविधाओं सरकारी योजनाओं एवं एन0जी0ओ0 के कार्यों आदि का मूल्यांकन –

क्र0सं0	सुविधाओं का मूल्यांकन	सूचनादाता से प्राप्त आंकड़े		प्रतिशत
		हाँ	नहीं	
1	आपके बच्चे की उचित वातावरण के साथ शिक्षा उपलब्ध हो रही है।	75%	25%	100%
2	क्या आपके बच्चे की फीस बजट में है।	35%	54%	100%
3	क्या आपको मूक बधिर विकलांग के कलए चलायी जा रही किसी भी योजना की जानकारी है।	72%	28%	100%
4	कानपुर नगर में चल रहे किसी भी एन0जी0ओ0 की जानकारी है जो मूक बधिर बच्चों की सहायता करते हैं।	15%	85%	100%

उपरोक्त सारणी के अनुसार जागरूकता का स्तर अच्छा पाया गया है परन्तु सुविधाओं का स्तर निम्न पाया गया है।

निष्कर्ष– निष्कर्ष तौर पर एवं प्राप्त आंकड़ों के अनुसार मूक बधिर बच्चों के विकास के लिए सरकारी योजनाओं का लाभ सामान्य स्तर पर नहीं पाया गया है, परन्तु जागरूकता का स्तर सामान्य पाया है, लाभान्वित की स्थिति में सुधार नहीं पाया गया है। पारिवारिक संरचना में मूक बधिर बच्चों की संख्या ज्यादा एकांकी परिवारों की पायी गयी है। जिससे काफी बच्चों में सामाजिक जागरूकता की कमी पायी गयी एवं विद्यालयी वातावरण मे बच्चों की उचित शिक्षा के साथ–साथ उनके कौशल विकास का भी उचित मार्गदर्शन किया जा रहा है।

संक्षिप्त रूप से हमें आज ऐसे बच्चों को समाज की धारा से जोड़ने के लिए आर्थिक सहायता के साथ–साथ सामाजिक तौर पर भी बिना भेदभाव के उन्हें आगे लाना चाहिए और सरकारी योजनाओं का सूचना प्रसारण अधिक से अधिक किया जाना चाहिए। जिससे ऐसे बच्चों की सहायता की जा सके और उन्हें एक दिशा दी जा सके तथा समाज की जीवन धारा से जोड़कर उनके बेहतर कल की तैयारी कर सकें। मूक बधिर बच्चो की मानसिकताओं को परखने के साथ–साथ उन्हें बेहतर स्वावलम्बन की भी आवश्यकता है एवं उन्हें एक स्वस्थ्य पर्यावरण के साथ–साथ हमें उन्हें समाज की जीवनधारा से जोडना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Singh, Anju. (2020,September 20). Utter Pradesh ke Raajakeey Mook Badhir Vidyayalayan mein Adhyayanrat Vidyaarthyon ka Samaajashaastreey Adhyan. Shodh Ganga.
2. Sharma, Annapurna. (2018). Mook Badhir Vidyarthion ke Samayojan Samasyaon ka adhyan Rajasthan ke sandarbh mein. Shodh Ganga.
3. Bhaskar.com/Local/Uttar Pradesh/Firohabad/news/education of deafchildren
4. https://www.bhaskar.com>news>CHH-DURG-MAL-Late
5. Census of India 2011
6. Chand Dinesh (shodh Ganga) (2 Nov-2017) ''सामान्य मूक बधिर और दृष्टिहीन छात्रो की आदतों सास्कृतिक क्रियाकलापों एवं शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन''

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

7. Disability affairs.gov.in
8. Deaf and Dumb School-Goonge Bahre ka Vidyalaya. Saket Nagar
9. https://earguru.in
10. Friedman, RJ and J.C. Exceptional children, 1971
11. Goonge Bahre ka Vidyalaya. P. Road, Kanpur.
12. Hajela Rakhi (Patrika.com21Jan-2021)
13. https://earguru.in नौकरियां/दिव्यांगों के लिए योजनाएं
14. hi.Vikaspedia.in
15. International Day of sign Language 2022 Daily current news Drasti IAS Youtube Channel.
16. Kumar, Vasant. (2019, March 1) High School Star ke samaya fv mook badhir vidhyaaarthi ki Budhi ev Srijinatmak ka tulnatmak adhyan. Shodh Ganga.
17. NEP2020 first anniversary livehindustan.com
18. Mishra Deaf & Dumb Care Center Khapra Mohal, Rail Bazar, Kanpur
19. Shukla, Vivek. (2021, Nov 29) अमर उजाला ब्यूरो गोरखपुर।
20. Verma, Pallavi and S.L., shini,ii. (2019, February) Design of communication interpreter for Deaf and Dumb person. Research Gate.
21. www.Rehab council.nic.in/nidhi/edhiniyam,htm.
22. WHO.int/teams/non communicable diseases/sensory functions disability
23. Wikipedia-Deaf and Dumb.
24. https://www.SAmanyagyan.com
25. https://www.etubharat.com state
26. shayarindia.in
27. कौशिक बी0एन0, विकलांग शिक्षा सिंधु, जयपुर : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1977.
28.. WWW.WHO 2011

*****